कश्मीर में आतंकवाद का विस्फोट 20 जनवरी 1989 को हुआ। वह रात भयानक थी। उस रात अचानक आग में शोले भड़क उठे। रातों–रात बसों में भरकर कश्मीरी पंडित कश्मीर से जम्मू की तरफ रवाना हो गए। उस भयानक रात में अपनी इज्जत आबरू की पोटली उठाए अपने तीन तीन मंजिला भरे घर अपने मुसलमान हमसायों के हवाले करके पंडित बसों में बैठ गए। उनके कानों में अभी भी यह नारे गूंज रहे थे"कश्मीरी पंडितों भाग जाओ,/हमें आजादी/चाहिए हमें कश्मीर चाहिए,/पंडितों के बगैर पंडिताइनो के साथ,/पाकिस्तान से रिश्ता क्या –लाइलाही इलल्लाह।"18 कश्मीरी पंडितों के जम्मू के शरणार्थी कैंपों में आने पर जम्मू में भी जनसंख्या विस्फोट हुआ तथा डोगरे राजपूतों की संख्या कम होती गई। उपन्यासकार ने लिखा है "अब डोगरे ही कहां रह गए। सौ के पीछे पच्चीस डोगरे हैं। बाकी कौन हैं, पता नहीं।"19

इस प्रकार उपन्यास में जम्मू की संस्कृति के विभिन्न आयाम पाठकों को दृष्टिगोचर होते हैं।

सन्दर्भ–(1)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.9 (2)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ. 23 (3)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.26 (4)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.30 (5)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.34 (6)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.42 (7)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.51 (8)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.53 (9)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.67 (10)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.72 (11)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.86 (12)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.97 (13)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.100 (14)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.186 (15)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.198 (16)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.203 (17)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.204 (18)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.209 (19)सचदेव पद्माः जम्मू जो कभी शहर था पृष्ठ.215–216

32.मरूस्थल में आर्थिक समृद्धि में 'एरण्ड' की भूमिका एवं आयर्वेदिक उपयोगिता–*डॉ.सत्यवती*

सह आचार्य–संस्कृत
माँ जालपा देवी राजकीय महाविद्यालय,तारानगर (चूरू) राज.

प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ एवं सुखी रहना चाहता है परंतु सुखी व स्वस्थ रखने वाली वैदिक व यौगिक जीवन पद्धति को पाश्चात्य प्रभाव के कारण हम विस्मृत करते जा रहें हैं। पंचभूतों से निर्मित इस शरीर में तीनों दोषों वात, पित्त व कफ के सम अवस्था में रहने पर ही यह शरीर स्वस्थ कहलाता है परंतु इनमें से किसी एक के भी विकृत होने पर शरीर में विभिन्न प्रकार के रोग उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं इन पंचतत्वों (भूतों) में वायु का भी बहुत महत्व है जो हमारे शरीर को गति प्रदान करता है। वायु के विकृत होने पर पित्त व कफ आदि भी प्रभावित होते हैं अर्थात इन तीनों में वात की प्रबलता अधिक है। शार्गधर संहिता में कहा गया है" पित्त, कफ तथा शरीर की अन्य धातुएँ तथा मल आदि ये भी पंगु (लंगडी) हैं अर्थात् ये सभी शरीर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्वयं नहीं जा सकते इन्हें वायु ही यत्र तत्र ले जाता है, जैसे आकाश में वायु बादलों को इधर–उधर ले जाता है। इन तीनों दोषों में पित्त व कफ की तुलना में वायु अधिक शक्तिशाली है क्योंकि यह सभी धातुओं व मल आदि का विभाग करने वाला और रजोगुण से युक्त सूक्ष्म, शीत, वीर्य, रुखा, हल्का और चंचल है।" वात विकृत होने पर संपूर्ण शरीर को हिलाकर रख देता है। शरीर में 10 प्रकार की वायु हैं जो शरीर के भिन्न–भिन्न भागों को प्रभावित करती हैं। कफ व पित्त का दुष्प्रभाव शरीर पर वायु जितना नहीं होता। वायु के बढ़ने पर शरीर पर नियंत्रण होना भी मुश्किल हो जाता है। वायु के विकृत होने पर शरीर में रक्त संचरण सही रूप में न होने से व्यक्ति पक्षाघात (लकवा) का शिकार हो जाता है। वायु शरीरस्थ हो या बाह्य हो दोनों के ही विकृत रूप प्राणी जगत् के लिए भयावह है। श्रीमद भगवत गीता के द्वितीय अध्याय में श्री कृष्ण जी अर्जुन को बुद्धि की स्थिरता के विषय में कहते हैं कि जैसे वायु समुद्र में नाव को हर लेती है अर्थात् वायु जिस दिशा में बहता है नौका को भी उसी दिशा में ले जाता है। ठीक इसी प्रकार शरीरस्थ वायु अन्य दोषों की तुलना में बढ़ने पर शरीर में विचलन उत्पन्न कर देता है। अथर्ववेद के आयुर्वेद में वात, पित्त तथा कफ से होने वाले रोगों के निवारणार्थ अनेक औषधियों व वनस्पतियों का वर्णन प्राप्त होता है। ऐसा ही एक औषधीय पादप एरण्ड है जो सभी स्थानों पर सरलता से प्राप्त हो